Dr Kumari Manju
H.O.D. Eco

TOPIC – Exchange Rate Policy
विनिमय दर नीति एवं प्रबंधन

P.G. IInd Sem
18-20

विनिमय वह दर है जिस पर एक देश की एक मुद्रा इकाई का दूसरे देश की मुद्रा में विनिमय किया जाता है। अर्थात् विदेशी विनिमय दर यह बतलाती है कि किसी देश की मुद्रा की एक इकाई के बदले दूसरे देश की मुद्रा की कितनी इकाइयाँ मिल सकती हैं। इस प्रकार विनिमय दर चालू मुद्रा के रूप में दी जाने वाली वो कीमत है जो विदेशी मुद्रा की एक इकाई के बदले दी जाती है।

विनिमय दर प्रबंधन नीति व्यापार नीति के पूरक का काम करती है। इसका कारण यह है कि विनिमय दर में परिवर्तनों के माध्यम से भुगतान शेष के चालू खाते में घाटे को कम किया जा सकता है। भारत में 1991 के पूर्व रुपये का मूल्य या तो डालर के साथ या पौंड स्टर्लिंग के साथ या फिर कुछ मुद्राओं के समूह के साथ बंधा हुआ था। जुलाई 1991 में जब भारत सरकार ने व्यापक पैमाने पर उद्योग क्षेत्र में सुधारीकरण के कदम उठाए तो रुपये के मूल्य में दो चार बार नीचे की ओर समायोजन किया गया इस प्रकार रुपये के मूल्य में 18-19 प्रतिशत अवमूल्यन किया गया। इस से यह आशा की गई कि देश के निर्यात में वृद्धि होगी, क्योंकि अवमूल्यन से विदेशी बाजारों में देश की वस्तुएँ सस्ती हो जाती हैं। जिससे भुगतान संतुलन में चल रहे भारी असंतुलन को दूर किया जा सकेगा। 1992-93 के बजट में उदारीकृत विनिमय दर प्रबंधन प्रणाली को लागू किया जिसके द्वारा आंशिक परिवर्तन लागू किया गया। 1993 में बाजार द्वारा निर्धारित विनिमय दर प्रणाली लागू की गई। इस प्रकार अब भारत में रुपये की विनिमय दर का निर्धारण मुख्यतया बाजार की शक्तियों के द्वारा होता है न कि सरकारी नीतियों द्वारा। चूंकि बाजार में अत्यधिक उतार-चढ़ाव न हो पाए इसलिए रिजर्व बैंक बाजार में हस्तक्षेप करता रहता है क्योंकि अत्यधिक उतार-चढ़ाव से अनिश्चितता का माहौल बनता है जो विदेशी व्यापार व निवेश के लिए हानिकारक हो सकता है।

"भारत में विनिमय दर प्रबंधन का उद्देश्य यह रहा कि रुपये का विदेशी मूल्य वास्तविक एवं विश्वसनीय हो जैसा कि चालू खाते में Sustainable (सहनीय) घाटा तथा प्रबन्धन योग्य विदेशी विनिमय स्थिति में प्रतिबिंबित होता है। इस व्यापक उद्देश्य-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में, भारत की विदेशी विनिमय दर नीति इस प्रकार निर्धारित की जाती है जिससे अत्यधिक उतार-चढ़ाव कम किए जा सकें, सट्टेबाजी जो अनिश्चितता का वातावरण पैदा कर सकती है, को रोका जा सके, विदेशी विनिमय का उचित भंडार बनाया जा सके, तथा एक विदेशी विनिमय बाजार का निर्माण किया जा सके"।

विदेशी विनिमय बाजार में प्रचलित अथवा बाजार दर में परिवर्तन विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति की परिवर्तनों पर निर्भर करती है। विनिमय दर को प्रभावित करने वाले निम्न प्रमुख तत्व हैं:

① व्यापार परिवर्तन: विदेशी विनिमय की माँग तथा पूर्ति निर्यातों तथा आयातों के परिवर्तन पर निर्भर करती है। यदि निर्यात आयातों से अधिक हैं

Scanned with CamScanner

तथा परेलू देश के पक्ष में परिवर्तित होती हैं किन्तु यदि आयात, निर्यातों से अधिक हैं तो विदेशी मुद्रा की माँग बढ़ती है तथा विनिमय दर देश के प्रतिकूल हो जाती है।

(2) पूँजी प्रवाह: अल्पकालीन अथवा दीर्घकालीन पूँजी का प्रवाह भी विनिमय दरों को प्रभावित करती है। यदि अमेरिका से भारत में निवेश के लिए पूँजी का प्रवाह हो रहा है तो विदेशी विनिमय बाजार में भारतीय रुपये की माँग बढ़ेगी जिससे भारतीय रुपये का अमेरिकन डॉलर में मूल्य बढ़ जाएगा।

(3) प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय: स्टॉक एक्सचेंज के सौदे विदेशी प्रतिभूतियों - शेयर, ऋण-पत्रों आदि के लेन-देन विदेशी विनिमय तथा विनिमय दर को प्रभावित करते हैं।

(4) बैंक दर: बैंक दर भी विनिमय दरों को प्रभावित करती है। यदि बैंक दर को बढ़ाया जाता है तो देश में विदेशों से ऊँची ब्याज की दर कमाने के उद्देश्य से अधिक कोषों का प्रवाह होगा। इससे विदेशी विनिमय की मुद्रा बढ़ेगी तथा विनिमय दर विदेशी मुद्रा के प्रतिकूल होगी। बैंक दर के कम होने से इसके विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

(5) विनिमय बाजार में सट्टे की क्रियाएँ विनिमय दर को प्रभावित करती हैं। यदि सट्टेबाज, विदेशी मुद्रा के मूल्य में कमी की संभावना रखते हैं तो वह उसे बेचना आरम्भ कर देंगे जिससे विनिमय दर विदेशी मुद्रा के प्रतिकूल तथा घरेलू मुद्रा के पक्ष में परिवर्तित होगी।

(6) राजनीतिक दशाएँ: यदि देश में राजनीतिक स्थिरता, ठोस तथा कुशल प्रशासन है तो विदेशी निवेश बढ़ता है जिससे घरेलू मुद्रा की माँग बढ़ेगी तथा विनिमय दर उस देश के पक्ष में परिवर्तित होगी।

थॉमस के अनुसार "चलन मुद्राओं के परस्पर मूल्यों को ही विदेशी विनिमय कहते हैं।"

क्राउथर के अनुसार "विनिमय दर एक देश की इकाई मुद्रा के बदले दूसरे देश की मुद्रा की मिलने वाली इकाइयों की माप है।"

विदेशी विनिमय दर माँग एवं पूर्ति के अनुसार ही निर्धारित होती है।

→ (1) विदेशों से वस्तुओं तथा सेवाओं का आयात (2) विदेशों में निवेश (3) विदेशों में भेंट तथा उपहार भेजना (4) विदेशी मुद्राओं के मूल्य पर सट्टा (5) अन्तर्राष्ट्रीय सौदों से सम्बन्धित अन्य भुगतान।

विदेशी विनिमय माँग के स्रोत: (1) विदेशों को वस्तुओं तथा सेवाओं का निर्यात (2) गृह देश में विदेशियों द्वारा निवेश (3) शेष संसार से भेंट प्राप्त करना (4) विदेशी विनिमय के सौदागरों एवं सट्टा करने वालों के कारण विदेशी मुद्रा का देश की ओर आना।